॥ श्रीः ॥

चन्द्रलोककी यात्रा.

अर्थात्

प्रेसिडेन्ट बार्बिकन आदि साहसी पुरुषोंका
पौरुषमय अपूर्व उपन्यास.

जिसको

सुप्रसिद्ध कृष्णाजी नारायण आठल्ये सम्पादक
केरलकोकिलके मराठी चंद्रलोककी सफरका; हिज
हायनेस दि. महाराजाधिराज होलकर बहादुर
इन्दौरके इंग्लिश क्लर्क पं॰ विनायक गोपाल
वक्षीद्वारा हिन्दीमें अनुवाद कराय

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रकट किया।

संवत् १९६७, शके १८३२.

इसके सर्वाधिकार राजनियमानुसार "श्रीवेङ्कटेश्वर"
यन्त्रालयाधीशने स्वाधीन रक्खे हैं.